पद ८

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

माणिका येई माणिका येई। प्रियनामा सच्चिदानंद धामा।।धू.।। आत्मा स्वच्छंदे नाचिवसी। जग मायिक भासविसी। करुनी कर्मातें उपनिषदें । अलिप्त तूं बोलविसी। स्फूर्णवाणीतें प्रेरविसी। अनिर्वाच्य तूं अससी।।१।। तत्पद ईश्वर तूं क्रीडाया। एकचि बहुधा होसी। आपणां विलोकुनी अति हर्षे। सर्वही आपणचि होसी। प्रवेश करूनियां निजसत्तें। दृश्य जडां चेतविसी। नामरूपाते दावुनियां। स्वस्वरूप लोपविसी।।२।। विनोद तूझा हा बहुरूपें। भक्तिबळें अवतरसी। देउनि पदसेवा निजसदनीं। आनंदें नांदविसी। ज्ञानमार्तांडा द्योतविसी। निर्विकार सुखराशी॥३॥